

# कथा-उपन्यास को जनसीदन ने दी नई दिशा : प्रो. दमन झा

- साहित्य अकादेमी की ओर से हुआ कार्यक्रम
  - जनार्दन झा जनसीदन के व्यक्तित्व पर डाला प्रकाश
- एजुकेशन रिपोर्टर|दरभंगा

साहित्य अकादेमी, दिल्ली की ओर से मैथिली के प्रख्यात साहित्यकार पंडित जनार्दन झा जनसीदन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर वेबिनार का आयोजन सोमवार को किया गया। जिसमें साहित्य अकादेमी की ओर से उप सचिव एन सुरेश बाबू मैथिली परामर्शी मंडल के संयोजक डॉ. अशोक कुमार झा अविचल मौजूद थे। कार्यक्रम दो सत्रों में आयोजित था।

प्रथम सत्र के अध्यक्ष थे प्रो. इन्द्रकांत झा थे। इस सत्र में एन सुरेश बाबू ने स्वागत भाषण किया। डॉ. झा अविचल ने विषय प्रवर्तन किया। उन्होंने जनसीदन जीके बहुआयामी व्यक्तित्व की चर्चा की। प्रो. दमन कुमार झा ने बीज भाषण में कहा कि जनसीदन जी मैथिली गद्य के निर्माता की श्रेणी में पहले पंक्ति के लेखक हैं। उन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, बंगला, हिंदी, ब्रजभाषा और मातृभाषा मैथिली

कथा व उपन्यास विधा के पथ प्रदर्शक थे जनसीदन

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. केष्कर ठाकुर ने की। उन्होंने कहा कि प्रतिभागियों के सभी आलेख उच्च कोटि की है। जनसीदन की गद्य एवं पद्य साहित्य की सुंदर समीक्षा प्रस्तुत की गई है। उन्होंने कहा कि जनसीदन मैथिली के उस काल खंड के लेखक हैं, जब इस साहित्य में कथा और उपन्यास विधा का सूत्र पात हो रहा था। उन्होंने इन दो विधाओं के लिए पथ प्रदर्शक का काम किया। इस सत्र में डॉ. नरेन्द्रनाथ झा, डॉ. निक्की प्रियदर्शिनी, आमोद कुमार झा आदि ने आलेख प्रस्तुत किया। विद्वानों ने जनसीदन के साहित्य पर विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने इसके विभिन्न पक्षों को रेखांकित किया।

में अच्छी पकड़ बना ली थी। उन्होंने बंगला के कई उपन्यासों का अनुवाद हिंदी में किया। इनकी कई रचनाएं सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई है। मैथिली साहित्य के क्षेत्र में उनके अवदानों को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।



# कई भाषाओं पर बनायी थी अच्छी पकड़ : प्रो. दमन

## प्रतिनिधि, दरभंगा

साहित्य अकादेमी, दिल्ली की ओर से मैथिली के प्रख्यात सहित्यकार पं. जनार्दन झा जनसीदन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर बेविनार का आयोजन किया गया. वेबिनार में मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अशोक कुमार झा अविचल ने उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की चर्चा की. उनके नाम पर साहित्य अकादमी द्वारा पुस्तक प्रकाशित किये जाने की जानकारी दी. पीजी मैथिली विभाग के प्रो. दमन कुमार झा ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर बीज भाषण प्रस्तुत किया. कहा कि जनसीदन जी मैथिली गद्य निर्माता के पहले पंक्ति के लेखक हैं. उन्होंने स्वध्याय से संस्कृत, बंगला, हिंदी, ब्रजभाषा और मैथिली में अच्छी पकड़ बना ली थी. बंगला के कई उपन्यासों का अनुवाद हिंदी में किया. उनकी कई रचनाएं सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है. सत्र के अध्यक्ष प्रो. इन्द्रकांत झा ने उनके

- साहित्य अकादमी प्रकाशित करेगी पुस्तक
- पं. झा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर बेविनार

कई उपन्यास एवं प्रकाशित कथा पर विचार व्यक्त किया. दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. केषकर ठाकुर ने की. इसमें डॉ. नरेन्द्रनाथ झा, डॉ. निक्की प्रियदर्शिनी और आमोद कुमार झा ने आलेख प्रस्तुत किये. इन विद्वानों ने जनसीदन के साहित्य पर विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की. उनके साहित्य के विविध पक्षों को रेखांकित किया. प्रो. ठाकुर ने उनके गद्य एवं पद्य साहित्य की समीक्षा प्रस्तुत की. कहा कि जनसीदन जी मैथिली के उस काल खंड के लेखक हैं, जब इस साहित्य में कथा और उपन्यास विधा का सूत्रपात हो रहा था. उन्होंने इन दो विधाओं के लिए पथ प्रदर्शक का काम किया. इससे पूर्व साहित्य अकादमी की ओर से उप सचिव एन सुरेश बाबू ने अतिथियों का स्वागत किया.